उन्नति
UNNATI

विचार

मई 15, 2020

कोविड-19 जैसी स्वास्थ्य संबंधी आपदा और पेयजल व्यवस्था पर फिर विचार करना होगा

(यह लेख उन्नति के कार्यक्रम अधिकारी श्री दिलीप बीदावत द्वारा लिखा गया है।)

कोरोना का कहर, बार–बार साबुन से हाथ धोने की हिदायत बाड़मेर जिले के पेयजल संकट ग्रस्त गांवों व ढाणियों के लिए तो केवल कहावत ही बनी हुई है। तापमान बढ़ने के साथ ही पानी का संकट बढ़ गया है। आम समुदाय के लिए जहां पानी का संकट आफत के रूप में विद्यमान है, वहीं दूसरी तरफ वाटर माफियाओं के लिए चांदी बटोरने का बेहतरीन जरिया भी बना हुआ है। इंदिरा गांधी नहर परियोजना के पानी को पाइपलाइन द्वारा सप्लाई सिस्टम वाटर माफियाओं के लिए वरदान साबित हो रहा है। सप्लाई सिस्टम में सेंध मार कर प्रतिदिन लाखों लीटर पानी टेंकर के जरिए बेच कर पैसा कमा रहे हैं। जलदाय विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों की मिली भगत से पानी चोरी, अवैध कनैक्शन का काम धड़ल्ले से हो रहा है। पाइप लाइन से अवैध कनैक्शन, एयर वाल्व को खोलकर व पाइप लाइन को तोड़ कर टेंकर भरने के कारण प्रेसर टूट जाता है तथा सप्लाई वाले गांव पानी से वंचित रह जाते हैं। पेयजल योजना से वंचित गांवों, ढाणियों में पानी वितरण का सिस्टम तक नहीं बन पाया है। रसूखदार लोगों की ढाणियों में पानी वितरण के प्वाइंट बनाये गये हैं जब कि गरीब, दलित समुदाय की ढाणियां अभी भी वंचित है। कोविड–19 के तहत लोक डाउन की स्थिति में लोगों को पानी से लिए अपना गला तर करने के लिए प्यास के कड़वे घूंट पीने पड़ रहे हैं।

कहानीः 1 बाड़मेर जिले की पाटोदी पंचायत समिति के गांव बड़नावा चारणान के रिमूखां का दो–तीन दिन में फोन आता है। कहते हैं बाकी तो सब ठीक है, लेकिन पीने का पानी समाप्त हो गया है। हमारी पचास ढाणियां हैं जिनमें सरकार का पानी सप्लाई का कोई प्वाइंट नहीं है। हैंड पंप भी नहीं है। टेंकर मंगवाते हैं, तो 1200 रू. लेता है। लोक डाउन के कारण मजदूरी नहीं है। पास में पैसा नहीं हैं, पानी कैसे खरीदें। रीढ़ की हड्डी में चौट लगने के कारण चलने–फिरने में अक्षम रिमूखां कहते हैं टांकों में जमा किया बरसात का पानी समाप्त हो गया। पशुओं को तो पांच–छः किलोमीटर दूर कहीं ले जाकर पिला सकते हैं लेकिन इन्सानों के लिए पानी की ज्यादा मुश्किल है। राजस्थान संपर्क पर 181 टॉल फ्री नंबर पर पिछले एक साल से बार–बार शिकायत कर रहा हूं, जलदाय विभाग के अधिकारी अलग–अलग तर्क देकर शिकायत का निस्तारण करने की मशक्कत करते हैं लेकिन समस्या का समाधान नहीं करते।

नागरिक नेता हासम खां ग्राम पंचायत बड़नावा जागीर के चार गांवों की जल सहेली समूह लीडर ने इस मुद्दे को उठाया तथा जलदाय विभाग के उच्च अधिकारियों से फोन पर संपर्क कर बताया। जे. ई.एन. पचपदरा को साथ लेकर तीन दिन तक एक–एक वितरण प्वांइट का विजिट किया तथा अवैध रूप से भर रहे टेंकर बंद करवाए तब इन रिमूंखा की ढाणियों के 50 घरों में सप्लाई आ सकी। साथ ही लंगा परिवारों के 75 परिवारों के पानी प्वांइट पर पानी वितरण चालू हो सका। हासम खां ने अपने गांव में पानी निगरानी का तंत्र बनाया है। कुछ लोगों को इसकी जिम्मेदारी दी है तथा सप्लाई नहीं आती है, अवैध तौर पर टेंकर भरे जाते हैं, तो फोन पर सूचना देते हैं और कार्यवाही करते हैं।

कहानीः 2 गांव लूंबानियों की ढाणी ग्राम पंचायत साजियाली रूपजी राजाबेरी जिला बाड़मेर, शांतिदेवी कालबेलिया कहती है, संकट के इस दौर में कुछ भामाशाहों ने राशन पहुंचाया हैं जिससे गुजारा चल रहा है, लेकिन पीने के पानी के लिए मीलों भटकना पड़ता है। टांकों में पानी समाप्त हो

गया। इंदिरा गांधी नहर के पानी की सप्लाई का प्वाइंट हमारी बस्ती में नहीं बनाया गया। एक हैंडपंप था जिसमें खारा पानी आता था, वह भी पिछले डेढ़ माह से खराब है। 181 पर शिकायत दर्ज कराई, जलदाय विभाग के अधिकारियों को अवगत कराया, लेकिन हैंड पंप ठीक नहीं हुआ। यहां 18 कालबेलिया परिवार रहते हैं। 40 फीट ऊंचे रेत के टीले पर बसे इन परिवारों के लिए आवागमन का कोई रास्ता नहीं है। वर्ष 2019 में ग्राम पंचायत ने महात्मा गांधी नरेगा के तहत ग्रेवल सड़क कार्य स्वीकृत कराया, लेकिन सड़क नहीं बनी। रेत के धोरे को काट कर मिट्टी इधर से उधर की जिसमें सारा पैसा खर्च हो गया, पेयजल की कोई योजना इस ढाणी तक नहीं पहुंची है। अकाल या आफत में राहत के दौरान सरकार की टेंकर से पानी सप्लाई भी यहां नहीं पहुंच पाती। टीले की ऊंचाई और रास्ता नहीं होने के कारण यहां दो ट्रेक्टर जोड़ कर पानी का टेंकर पहुंचाया जा सकता है। नजदीक में पानी का कोई स्रोत नहीं है। पानी का टेंकर 20 किलोमीटर दूर गांव भाखरसर से आता है। 3500 लीटर क्षमता वाले एक टेंकर के 2300 रू. खर्च करने पड़ रहे हैं।

लूंबानियों की ढाणी जल सहेली समूह लीडर शांतिदेवी कालबेलिया व भवंरी देवी ने हैंड पंप को ठीक कराने के लिए 181 पर शिकायत दर्ज कराई, लेकिन कार्यवाही नहीं हुई। सोखड़ों की बेरी के नागरिक नेता लूंबाराम व भवंरी देवी गांव के कुछ जागरूक लोगों के साथ मिलकर इंदिरा गांधी नहर से आ रही पाइप लाइन से दलित समुदय की ढाणियों में वितरण प्वाइंट नहीं बनाए जाने को लेकर पीएचईडी के अधिकारियों को बार–बार अवगत करा रहे हैं, लेकिन अभी तक कार्यवाही नहीं हुई है।

उन्नति की ओर से अत्यधिक संकट वाली ढाणियों में टेंकर से पीने का पानी सप्लाई किया जा रहा है। कालबेलिया समुदाय की ढाणियों में पांच–पांच परिवारों के पांच समूह बनाए गये हैं तथा 25 परिवारों को पीने के लिए पांच टेंकर पानी उपलब्ध कराया है। पांच के समूह में से आम सहमति से किसी एक व्यक्ति के टांके में पानी डालते हैं तथा पांच परिवार मिलकर बराबर उसका उपयोग करते हैं। परिवारों ने आपस में मिलकर वितरण का सिस्टम बनाया है। कालबेलिया समुदाय की इन ढाणियों में दो ट्रेक्टर जोड़कर पानी पहुंचाया गया है।

कहानीः 3 ग्राम पंचायत रिछोली जिला बाड़मेर के गांव करणीसर में भील समुदाय की 25 ढाणियों में पेयजल विभाग की पानी सप्लाई नहीं है। कुछ साल पहले एक जीएलआर बनाकर उसे पाईप लाइन से जोड़ा गया था, लेकिन उसमें पानी कभी नहीं आया। व्यक्तिगत टांकों एवं तालाब में पानी सूख गया है। रोज मजदूरी कर आटा, लूण, मीर्च का जुगाड़ करने वाले इन गरीब परिवारों की कोई सुध लेने वाला नहीं है। गांव के बाबूराम भील ने बताया कि हर साल गर्मी में यही हाल होता है। पिछले दो सालों से राजस्थान संपर्क के माध्यम से जलदाय विभाग के अधिकारियों को इस समस्या से अवगत करा रहे हैं, लेकिन उचित समाधान नहीं हुआ है। लोक डाउन में मजदूरी बंद है। पानी का टेंकर पाटोदी के पास गांव भाखरसर से आता है तथा एक टेंकर के 1500 रू. लेता है। पानी खरीद कर प्यास बुझाएं या आटा खरीद कर भूख मिटाएं, इसी असमंजस में दिन काट रहे हैं। गरीबी में आटा गीला वाली कहावत लोक डाउन में उल्टी हो गई। आटे का तो किसी प्रकार से जुगाड़ कर लेते हैं, लेकिन गीला करने के लिए पानी नहीं है।

ग्राम पंचायत रिछोली के गांव करणीसर के नागरिक नेता बाबूराम भील जल सहेली लीडर पिछले एक साल से राजस्थान संपर्क पर पानी वितरण की व्यवस्था के लिए प्रकरण दर्ज करा रहे हैं। प्रकरण का निस्तारण यह कह किया जा रहा है कि इंदिरा गांधी नहर से पाइप लाइन द्वारा पानी वितरण का कार्य चालू है तथा यह कार्य पूर्ण के होने के पश्चात पानी वितरण व्यवस्था किया जाना संभव है। लोक डाउन की स्थिति में अतिरिक्त जिला कलक्टर को फोन पर अवगत कराया तथा टेंकर से पानी सप्लाई करने की मांग की। उन्होंने आश्वासन दिया, लेकिन अभी तक टेंकर से पानी वितरण की व्यवस्था प्रारंभ नहीं हुई है।

उन्नति द्वारा करणीसर में पांच–पांच परिवारों के छः समूह बनाए गये तथा छः टेंकर पीने का पानी सप्लाई किया गया है। पांच परिवारों के समूह में आम सहमति से एक परिवार के टांके में पानी टेंकर डाला गया है तथा परिवार मिलजुल कर प्रति दिन पांच–छः मटका पानी पीने के लिए प्राप्त करते हैं। पशुओं को चार किमी दूर रिछोली गांव में पानी पिला कर लाते हैं। इससे 15 से 20 दिन निकल लाएंगे। लेकिन मानसून आने तक पानी का संकट रहेगा।

बाड़मेर जिले की पाटोदी पंचायत समिति की नवसृजित ग्राम पंचायत गंगापुरा में भील समुदाय की 50 ढाणियां हैं। इन ढाणियों के पास से इंदिरा गांधी नहर परियोजना से पेयजल सप्लाई योजना की पाइप लाइन गुजरती है, लेकिन ढाणी के लोगों को इसका कोई लाभ नहीं है। गांव में एक हैंड पंप है जिसके निर्माण के बाद कुछ दिन पानी आया, अब पानी नहीं आता। गांव के किरता राम भील ने

बताया कि व्यक्गित टांकों में पानी समाप्त हो गया। अब पानी के लिए ढाणियों के लोग कष्ट झेल रहे हैं। पाइप लाइन से पानी सप्लाई का प्वाइंट हमारी ढाणियों में नहीं बनाया गया। बड़नावा जागीर में प्रतिदिन पाइप लाइन से चोरी कर सैंकड़ों टेंकर भर कर पानी बेच रहे हैं, लेकिन हमें मटका भरने तक के लिए सार्वजनिक प्वाइंट नहीं दिया गया। टेंकर वाले पाइप लाइन तोड़ कर, होदियों में पाइप डालकर तथा अपने टांकों में अवेध कनैक्शन कर पनी भरते हैं तथा टेंकर से बेच रहे हैं। यह सारा काम जलदाय विभाग के अधिकारियों व स्थानीय कर्मचारियों की जानकारी में हो रहा है।

गंगापुरा के नागरिक नेता किरताराम एवं जल सहेली लीडर ने फिल्ड ऑफिस पाटोदी में आकर बताया कि संपर्क पोर्टल पर फोन से शिकायत दर्ज नहीं कर रहे हैं। हमारी लिखित में राजस्थान संपर्क पोर्टल शिकायत दर्ज कराओ। 5 मार्च 2020 को शिकायत दर्ल कराई जिसका नंबर 0520065769 1585 है। 19.5 2020 को शिकायत का स्टेटस देखा गया तो पता चला कि संपर्क पोर्टल से यह शिकायत संबंधित विभाग को भेजी नहीं गई है। जल सहेली समूह लीडर ने बताया कि उनकी ढाणियों के बीच से पाइप लाइन गुजरती है। लेकिन वितरण प्वांइट नहीं बनने से हमें सप्लाई नहीं मिल रही। टेंकर वाले लाइन तोड़ कर पानी भर लेते हैं, लेकिन हम एसा नहीं करेंगे।

उन्नति की तरफ गंगापुरा में 30 परिवारों के छः समूह बनाए गये हैं तथा छः टेंकर पीने के लिए पानी उपलब्ध कराया गया है।

पाटोदी पंचायत समिति की नवसृजित ग्राम पंचयत खारड़ी में नए बने राजस्व गांव आशूनगर में सरकार की पानी वितरण की व्यवस्था चालू नहीं है। गांव में जीएलआर बना हुआ है लेकिन उसमें पानी के सोर्स से कनैक्शन नहीं है। खारड़ी में इंदिरा गांधी नहर का पानी आता है। ऑवरहैड टेंक बना है जिसके माध्यम से तीन गांवों में पानी वितरण की योजना है। दो गांवों में वितरण प्रारंभ हो गया, लेकिन आशुनगर वंचित है। जल सहेली लीडर द्वारा जलदाय विभाग के जेइएन से संपक्र कर पानी वितरण व्यवस्था चालू कराने की मांग की गई तो उनका कहना था कि अभी योजना कार्य निर्माणाधीन है।

उन्नति की तरफ से आशुनगर के समुदायों की मांग से अधिकारियों को अवगत कराने के साथ–साथ तत्काल व्यवस्था के लिए 30 निःसहाय परिवारों के पांच–पांच परिवारों के छः समूह बनाए गये हैं तथा टेंकर से पीने का पानी सप्लाई की गई है।

रेगिस्तान के ग्रामीण क्षेत्रों में लोग पानी के विषय में आत्मनिर्भर हैं। कुल उपभोग की सत्तर प्रतिशत जल आपूर्ति बरसात के पानी को अलग–अलग प्रकार के व्यक्तिगत और सामुहिक संसाधनों में संग्रहण कर करते हैं। कारण यह भी रहा है कि रेगिस्तान के अधिकांश क्षेत्रों में भूजल लवणीय और फ्लोराइडयुक्त है। इसी को ध्यान में रखते हुए समुदाय ने बरसात के पानी को संग्रहण कर पेयजल पूर्ति के विविध प्रकार के संसाधनों का निर्माण और प्रबंधन और उपयोग की व्यवस्था को बनाया।

लेकिन यह व्यवस्था कारगर और मजबूत होते हुए भी कुछ परिस्थितियों में जवाब दे जाती है। बरसात के पानी को संग्रहण करने के लिए बनाए गये सामुहिक एवं व्यक्तिगत संसाधनों में जमा

किए गये पानी से जुलाई से मार्च तक काम चलता है। उसके बाद तालाबों व व्यक्तिगत टांकों में पानी समाप्त होने लगता है और ऐसे समय में लोगों को वैकल्पिक व्यवस्था की जरूरत होती है। अप्रेल से जुलाई तक चार महीने संकट के होते हैं जब पारंपरिक जल स्रोत भी सूख जाते हैं, भूजल भी गहरा चाला जाता है और उसकी गुणवत्ता घट जाती है। चार महीने लोगों को वैकल्पिक व्यवस्था जिसके तहत उन्हें पाइप लाइन या अन्य संसाधनों से पानी वितरण व्यवस्था की जरूरत होती है।

समुदाय द्वारा विकसित की गई पारंपरिक पेयजल व्यवस्था पूरी तरह से मानसून पर निर्भर है। बरसात के वार्षिक सामान्य औसत के अनुसार ठीक–ठाक होती है, तो स्रोतों में पर्याप्त पानी जमा होता है और आठ महीने लोग पानी के मामले में आत्मनिर्भर हो जाते हैं। पिछले कुछ सालों में बदले बरसात के पैटर्न, समय और बूंदों के धरती पर गिरने की रफ्तार और बूंदों के आकार में बदलाव देखा गया है जिससे स्रोतों में पानी का आगमन कम हुआ है। बरसात के पानी को संग्रहण करने के लिए बनाए गये स्रोतों में तेज व बड़ी बूंदों के लगातार एक से डेढ़ घंटा बरसने पर कैचमेंट ऐरिया में बहते हुए पानी स्रोत तक पहुंचता है। गत वर्ष बरसात सामान्य औसत स्रोतों में पानी बरसात कम और धीमी गति से होने के कारण सामुहिक एवं व्यक्तिगत दोनों प्रकार के स्रोतों में पानी कम जमा होने से पानी का संकट बढ़ा है।

बाड़मेर जिले में गत साल बरसात कम होने के कारण इस वर्ष मार्च महीने में पानी का संकट प्रारंभ हो गया था। बरसात के सरकारी आंकड़ों के अनुसार बाड़मेर जिले में गत मानसून में बरसात सामान्य और जैसलमेर से सामान्य से कम हुई। बाड़मेर में सामान्य औसत 150 एमएम की जगह गत मानसून सीजन में 134 एमएम तथा जैसलमेर जिले में 98.5 के मुकाबले 79.89 एमएम बरसात हुई। बरसात कम होने तथा तेज बौछार में नहीं होने के कारण पारंपरिक और व्यक्तिगत स्रोतों में पानी कम आया। जिन गांवों में सरकार की पेयजल योजना तक पहुंच नहीं है, उन गांवों के हालात ज्यादा खराब हो गये।

हर वर्ष इसी समय पानी का संकट होता लेकिन इस साल पानी के संकट के साथ कोरोना वायरस स्वास्थ्य संबंधी आपदा के कारण पेयजल योजना से वंचित गांवों और ढाणियों में संकट और अधिक बढ़ गया। इसका मुख्य कारण यह रहा है कि सामान्य समय में जब संकट आता है, तब लोग सरकार से मांग करते हैं और कोई न कोई वैकल्पिक व्यवस्था हो जाती है। लेकिन यह समय ऐसा रहा जब लोगों की बात को सुना ही नहीं गया। सरकार का ग्रिवेंस निस्तारण तंत्र पूरी तरह से बंद है। प्रशासन तक लोगों की पहुंच नहीं बन रही है। सभी के पास जिला एवं ब्लॉक स्तरीय प्रशासनिक अधिकारियों के संपर्क नंबर नहीं हैं। आवागमन के साधन बंद है। लोग पानी के संकट की अपनी फरियाद संबंधित विभाग तक नहीं पहुंचा पा रहे हैं। पहुंच भी रही है तो, समाधान के प्रयास नहीं हो रहे। यही कारण है कि कोरानो वायरस से निपटने के लिए किए लोकडाउन के कारण लोग अपने कष्टों को झेलने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर पा रहे हैं।

रेगिस्तान में गर्मी के चार महीनों में पानी का संकट बढ़ना आम बात है क्यों की उनकी अपनी व्यवस्थाओं की क्षमता समाप्त हो जाती है। बरसात कम ज्यादा होने से यह संकट घटता बढ़ता रहता है। इस समस्या के समाधान के लिए सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की पेयजल योजनाएं चलाई जा रही है। लेकिन यह व्यवस्थाएं सामान्य समय में ठीक से काम नहीं करती और संकट के समय पूरी तरह से जवाब दे जाती है। इसके कुछ कारण हैं –

1. असामन वितरण व्यवस्था प्रमुख कारण के रूप में सामने आया है। पानी वितरण के प्वांइट बनाते समय यह नहीं देखा जाता कि गांव की सभी ढाणियों व वर्गों की इस व्यवस्था तक पहुंच कैसे बनेगी। वर्तमान में नहरों के पानी को पाइप लाइनों द्वारा गांवों तक पहुंचाने की योजनाओं में भी पानी वितरण के प्वांइट से दलित व गरीब परिवारों की ढाणियों को वंचित रखा गया है। गांव की सामाजिक व्यवस्था में प्रभावशाली वर्ग सरकारी पानी वितरण व्यवस्था को अपनी आसान पहुंच के हिसाब से निर्मित व संचालित करवाते हैं।
2. सरकारी पानी वितरण की योजनाओं में क्रियान्वयन, प्रबंधन, वितरण और निगरानी में समुदाय की भागीदारी की जगह नहीं है। अपने स्वयं के पारंपरिक संसाधनों को ठीक तरीके से चलाने वाला समुदाय हैंड पंप खराब होने, पाइप लाइन टूट जाने, अवैध कनैक्शन रोकने, अनाधिकृत तरीके से टेंकर भरने, पानी की चोरी व छिज्जत को रोकने जैसे मुद्दों को समुदाय ही अच्छे से प्रबंधित कर सकता है। समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित नहीं करना जल संकट का एक कारण है।
3. गांववार पानी की जरूरत और आपूर्ति करने वाले विभागों में समन्वय एवं समुदाय की सहभागिता से नियोजन का अभाव के कारण योजनाएं सफल नहीं हो पाती। एक गांव में कुल जन संख्या, पशुओं की संख्या के अनुसार कितने पानी की वर्तमान आवश्यकता है,

अगले पांच सालों में कितनी जरूरत होगी, गांव के अपने स्वयं के स्रोतों से कितनी पूर्ति होगी तथा कितने अतिरक्त पानी की वैकल्पिक व्यवस्था करनी होगी, यह आकलन कर प्लानिंग और क्रियान्वयन होने से ही जल संकट का स्थाई समाधान हो सकता है।

4. कोई भी आपदा सूखा, स्वास्थ्य जैसी महामारी आदि के समय में गांव में पानी का कितना संकट आता है, क्या व्यवस्था होगी इसका प्लान भी होना जरूरी है। पानी परिवहन के लिए ग्राम पंचायत को कितने ट्रेक्टर टेंकर जी जरूरत होगी। पंचायतों के स्वयं के पास पानी परिवहन के लिए ट्रेक्टर टेंकर और संचालन के खर्च की व्यवस्था करने पर विचार करना होगा।

उन्नति विकास शिक्षण संगठन राजस्थान के रेगिस्तानी जिलों में मरूधरा में जल स्वावलंबन परियोजना पर काम कर रहा है। परियोजना का मुख्य उद्देश्य रेगिस्तान में जल स्वावलंबन की पारंपरिक व्यवस्था को प्रोत्साहित करना है ताकि लोगों की पानी पर आत्मनिर्भरता बनी रहे। वैकल्पिक पेयजल व्यवस्थाओं के साथ–साथ वो अपने स्वयं के संसाधनों के विकास और प्रबंधन की परंपरा को बनाए रखें ताकि संकट के समय काम आ सकें। गांव के सामुहिक संसाधनों को उपयोग योग्य बनाए रखने के लिए अपने स्वयं ंके तंत्र को मजबूत बनाएं रखें।

उन्नति द्वारा 24 फरवरी से 5 मार्च, 2020 तक नागौर जिले की झाड़ेली ब्लॉक के 40 गांवों में की गई शोध यात्रा में यह समझने का प्रयास किया गया था कि लोग पानी की पारंपरिक व्यवस्था और उपयोग के संबंध में क्या तरीके अपनाते थे या आज भी अपना रहे हैं। इस व्यवस्था की क्या मजबूतियां रही है जो पीढ़ियों से चली आ रही है और क्या कमजोरियां रही, जिसके कारण कुछ गांवों में यह व्यवस्था ध्वस्थ हो गई। 40 गांवों में से 10 गांव ऐसे मिले जो आज भी पारंपरिक व्यवस्था से अपने गांव के पानी की पूर्ति करते हैं। यहां लोगों ने बड़े गर्व के साथ कहा कि अगले सौ सालों तक भी हम पानी के लिए किसी सामने हाथ नहीं फैलाएंगे। इन गांवों में सरकार की योजनाएं भी आई। वर्तमान में इंदिरा गांधी नहर का पानी पाईप लाइन द्वारा पहुंचाने की योजना पर काम चल रहा है। लेकिन लोगों ने एक बड़ी बात इस दौरान कही वो यह कि सरकार की योजनाओं के भरोसे रह कर हमने देख लिया। इस लिए हमारी खुद की व्यवस्थाओं को बचाकर रखना जरूरी है। इसका एक बड़ा कारण लोगों ने बताया वह महत्वपूर्ण है। लोगों का कहना कि सरकारी व्यवस्था हमारे हाथ में नहीं है। उस व्यवस्था के प्रबंधन, संचालन, वितरण और उपयोग में हमारी कोई भागीदारी नहीं है। लेकिन हमारी अपनी व्यवस्था को हम अच्छे से चलाते आए हैं और चला रहे हैं। बाकी के तीस गांवों में लोगों ने अपनी खुद की व्यवस्थाओं को खत्म कर दिया और पूरे साल पानी का संकट झेलते हैं। इनत तीस गांवों का आकलना निकला कि सरकारी योजनाओं के संचालन के बावजूद पीने के पानी के लिए प्रतिमाह 2000 से 5000 रू. खर्च करने पड़ते हैं।

ty lkrk dh thih,l efix%

जल स्वावलंबन परियोजना के तहत उन्नति द्वारा बाड़मेर जिले के फिल्ड क्षेत्र पाटोदी में जल स्रोतों की जीपीएस मैपिंग की गई। इसको करने का मुख्य उद्देश्य यह जानना था कि गांवों में पारंपरिक एवं सरकारी पेयजल व्यवस्था के लिए बनाए गये संसाधनों की वर्तमान में क्या स्थिति है।

ikVknh o fl.k/kjh Cykd e ikuh d lkrk d thih,l efix dh fLFkfr%

Water Resource	total	Functional	Non Functional	Potable	Non Potable	If Functioinal water Use For Drinkinng	If Functional Water use For Irrigation	If Functionnal water Use For Washing & Bathing	If Functional Water Use For Cattle
Naada/Naadi	128	94	34	72	22	59	14	57	73
Talab	29	25	4	21	4	21	0	21	24
Community Tanka	460	314	86	292	22	275	21	211	128
Beri/Bera	88	68	20	59	9	52	43	57	68
Hand Pump	423	275	148	252	23	231	72	242	248
GLR	236	153	83	139	14	134	11	125	129
Tubewell	33	28	5	28	0	28	24	25	28
Total	1376	996	380	902	94	838	186	739	799

सारणी से समझ आ रहा है कि 128 नाडा, नाडी में से 75 प्रतिशत नाडा–नाडी उपयोगी हैं तथा 62 प्रतिशत नाडा तालाब के पानी का उपयोग पीने के लिए करते हैं। 60 प्रतिशत स्नान व कपड़ा धोने व अन्य घरेलू जरूरतों के लिए तथा 77 प्रतिशत उपयोग पशुओं के उपयोग के लिए करते हैं जो रेगिस्तान के आजीविका का प्रमुख स्रोत है। नाडा–नाडी एक प्रकार के छोटे तालाब होते हैं जो एक या गांव की जरूरत को पूरा करते हैं तथा औसतन चार से छः माह तक का पानी संग्रहण रहता है। इनकी प्रबंधन व्यवस्था समुदाय करता है।

86 प्रतिशत तालाब उपयोगी हैं तथा 84 प्रतिशत पानी का उपयोग पीने के लिए, 96 प्रतिशत पशुओं के लिए करते है। तालाब बड़े आकार के होते हैं तथा पानी का जमाव व ठहराव अधिक समय तक रहता है। तालाबों पर कई गांव निर्भर होते हैं। इनकी प्रबंधन व्यवस्था पूरी तरह से समुदाय करता है। कुल 88 में से 77 प्रतिशत बेरा व बेरी उपयोगी है तथा 59 प्रतिशत पीने का पानी के लिए उपयोग होता हैं।

कुल 68 प्रतिशत सामुदायिक टांका, कुंड उपयोगी हैं। 59 प्रतिशत टांकों, कुंडों में जमा किया गया बरसात का पानी पीने के उपयोग में आता है। टांका या कुंड पारंपरिक जल स्रोत है। यह जमीन के अंदर सामान्यतः लगभग 10 से 12 फुट गहरा से 25–30 फुट तक गहराई व 10 से 15 फुट चौडाई

में बनाया गया अंडरग्राउंड टेंक है। इसके चारों तरफ मुरम व चिकनी मिट्टी का कैचमेंट ऐरिया बनाया जाता है जिससे बरसात का पानी टांके के आ सके।

हैंडपंप 423 में से 65 प्रतिशत हैंडपंप उपयोग योग्य हैं। हैंडपंपों की उपयोगिता की दर काफी कम है। पेयजल संकट वाले गांवों व ढाणियों में हैंडपंप लगाए गये हैं। हैंड पंप का पानी भुजल स्रोत से जुड़ा है। यह खारा तथा अत्यधिक फ्लोराइड सुक्त है। हालांकि विश्लेषण बताता है कि 54 प्रतिशत हैंड पंप का पानी पीने के उपयोग में लेते हैं। समुदाय के स्वयं के जल स्रोतों में पानी समाप्त हो जाने पर संकट के समय पीने के उपयोग में लेते हैं। इनका संचालन व मरम्मत आदि जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग (पीएचईडी) द्वारा किया जाता है।

कुल 236 जीएलआर (ग्रांउड लेवल रिजरवायर) में से 64 प्रतिशत उपयोगी हैं जो सभी पारंरिक जल स्रोतों की उपयोगिता दर से कम है। जीएलआर में किसी दूसरे स्थान से, जहां पानी उपलब्ध है, पाइप लाइन द्वारा मोटर पंप से पंपिग कर पानी वितरण किया जाता है। इनका संचालन व मरम्मत आदि जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग (पीएचईडी) द्वारा किया जाता है।

कोरोना वायरस से बचाव के लिए किए गये लोक डाउन और जारी किए गये दिशानिर्देशों के कारण उत्पन्न हुए संकट में पानी भी एक बडे संकट के रूप में सामने आया है और सरकार व समुदाय दोनों को ही विचार करने का अवसर दिया है। जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य संबंधी वर्तमान और संभावित आपदाओं, सूखा, बाढ़ जैसी स्थिति में जल प्रबंधन की सहभागी व्यवस्था पर गंभीरता से विचार करना होगा। पारंपरिक जल स्रोतों की समुदाय आधारित विकास और प्रबंधन व्स्था को समझने और पानी वितरण की नई योजनाओं के निर्माण से लेकर संचालन, वितरण प्रबंधन,में समुदाय की सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए मन बनाने की जरूरत है।

सभी को पीने का पानी उपलब्ध कराने के लिए नल से जल योजना के वर्ष 2024 तक देश के प्रत्येक परिवार को पीने का शुद्ध जल उपलब्ध कराने का सरकार का वादा स्वागत योग्य है। लेकिन यह सिस्टम तभी कारगर हो सकता है जब इसके प्रबंधन, संचालन, वितरण, निगरानी और उपयोग में स्थानीय समुदाय, ग्राम पंचायत, ग्रामसभा की पूरी तरह से भागीदारी सुनिश्चित करने की बाध्यता हो। यह देखने में आया है कि जहां समुदाय की भागीदारी नहीं है वहां पर पेयजल की योजनाएं कारगर ढंग से काम नहीं कर रही है।

उन्नति द्वारा लोक डाउन के दौरान बाड़मेर जिले फिल्ड क्षेत्र पाटोदी व सिणधरी ब्लॉक मेंसरकारी पेयजल व्यवस्था की पहुंच से दूर अत्यधिक पेयजल संकटग्रस्त गांवों व ढाणियों में ट्रेक्टर टेंकर से पानी वितरण किया गया।

mUufr }kjk i;ty ladVxLr xkoksa esa ykWd Mkmu ds nkSjku VSadj ls ikuh forj.k dh 0;oLFkk %

पाटोदी				सिणधरी		
क सं.	गांव	परिवार	टेंकर संख्या	गांव	परिवार	टेंकर संख्या
1	करनीसर	25	5	नालों की ढाणी	40	6
2	हरिनगर	15	3	टाकुबेरी	41	6
3	ओकातियाबेरा	15	3	टांको की ढाणी	10	1
4	कवंरली	20	4	एडसिणधरी	38	6
5	सुरजबेरा	20	5	भाटियाडेर	17	2
6	हड़मतनगर	35	7	त्रिसुलिया	20	4
7	गोलिया	40	8	गेदारासरा	72	6
8	बड़नावा चारणान	25	5	बान्डानाडा	57	5
9	आसुनगर	50	10	धन्ने की ढाणी	15	3
10	गंगापुरा	50	10	लौहिड़ा	18	3
11	सुल्ताननगर	30	06	एमडीकौशलु	35	4
12	लूंबानियों की ढाणी	30	6	मेहराणियो की ढाणी	40	4
13	प्रतापनगर	10	2	नाकोड़ा	39	5
14	सा.पदमसिंह	30	6	पायलांकला	15	3
15				मायलों की ढाणी	45	6
16				गालानाडी	22	3
17				म्हादेवनगर	22	4
18				डाभडभाटियान	23	5
19				क्रना	8	1
कुल		402	80		577	77

ट्रेक्टर टेंकर से पानी वितरण व्यवस्था में पानी तक आसान पहुंच और सहभागिता से बराबर पानी का उपयोग हो, इसके लिए पांच परिवारों का एक समूह बनाया गया। पांच परिवारों में आम सहमति से किसी एक परिवार के टांके में टेंकर से पानी डाला गया तथा पांचों परिवारों ने मिलकर प्रतिदिन उपयोग की व्यवस्था बनाई।

पाटोदी में लूंबानियों की ढाणी, प्रतापनगर भीलों की ढाणी, आसूनगर भीलों की ढाणी, गंगापुरा भीलों की ढाणी की बसावट रेत क धोरों के बीच है तथा कच्चे रास्ते हैं। मई में चली आंधियों के कारण रास्ते भी मिट्टी से भर गये। इन गांवों में एक टेंकर पानी को दो ट्रेक्टर जोड़ कर पहुंचाया गया।

पांच के समूह में पीने के लिए पानी का उपभोग करने की व्यवस्था को समुदाय ने अच्छे से संचालित किया। अपवाद को छोड़कर किसी भी गांव में विवाद या शिकायत नहीं आई। इस प्रकार की व्यवस्था करना रेगिस्तान के लिए कोई नई बात नहीं है। पारंपरिक व्यवस्था में भी संकट के समय पानी की उपलब्धता का आंकलन व परिवार वार जरूरत का आकलन कर स्थानीय स्रोतों से पानी वितरण की व्यवस्था बनाई जाती थी।

उन्नति

UNNATI

विकास शिक्षण संगठन

जी-1, 200, आज़ाद सोसायटी, अहमदाबाद-380015

फोनः 079-26746145, 26733296

email: psu_unnati@unnati.org, publication@unnati.org

वेबसाइटः www.unnati.org

राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय

650, राधाकृष्णन पुरम, लहरिया रिसोर्ट के पास, चौपासनी-पाल बाई पास लिंक रोड, जोधपुर-342014, राजस्थान

फोनः 7425858111

email: jodhpur_unnati@unnati.org

केवल सीमित वितरण के लिए

इस बुलेटिन के लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।

आप लोक शिक्षण व प्रशिक्षण के लिए विचार में प्रकाशित सामग्री का सहर्ष उपयोग कर सकते हैं। कृपया सौजन्य का उल्लेख करना न भूलें और साथ ही अपने उपयोग से हमें अवगत करवायें ताकि हम भी उससे कुछ सीख सकें।